लखनऊ, भोपाल, जयपुर, आगरा, गोण्डा, सुल्तानपुर, अमेठी और फैज़ाबाद में प्रसारित

हिन्दी व अंग्रेज़ी साप्ताहिक समाचारपत्र

खुशी समय

KHUSHI SAMAY

RNI No.: UPBIL/2012/46720

HINDI & ENGLISH WEEKLY NEWSPAPER

LUCKNOW

● वर्ष 3 ● अंक 12 | लखनऊ, रविवार 4 जनवरी 2014 | पृष्ठ - 8 मूल्य -2 रुपये

रिश्ते जोड़ती है सपा की योजनाएं : अखिलेश

लखनऊ। मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सियासी विरोधियों पर फिर 'बुद्धि दांव' का इस्तेमाल करते हुए कहा है कि उनकी सरकार रिश्ते जोड़ने वाली योजनाएं चला रही है। बसपा सरकार की नीतियां जनता देख चुकी है, विधानसभा चुनाव तक केंद्र सरकार के ढाई साल का सच भी उसके सामने होगा। उन्होंने कहा कि नए साल में रिक्शे भी बांटे जाएंगे। चिकित्सा, कृषि विश्वविद्यालय खुलेंगे। विकास की ढेरों योजनाएं शुरू होंगी।



पत्रकारों से बातचीत में मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने 'कन्या विद्या धन' व समाजवादी पेंशन से जुड़े किस्से सुनाते हुए कहा कि उनकी योजनाएं परिवार व रिश्ते जोड़ती हैं। बतौर नजीर बताया कि कन्या धन का चेक वितरित करते समय उन्होंने बेटियों से सवाल किया था कि रुपये का क्या करोगी, उस समय ज्यादातर ने कहा था कि मां को देंगी। समाजवादी पेंशन लेने आयी बुजुर्ग महिलाओं ने पेंशन का पैसा बेटियों की पढ़ाई और तरक्की में खर्च करने की बात कही थी। साफ है कि समाजवादी सरकार की योजनाएं परिवार व रिश्ते जोड़ने में कारगर हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सोलर पावर, लोहिया आवास योजना चली। साइकिल से वैट हटाया गया। एम्बुलेंस योजना से लाखों मरीजों को समय से चिकित्सा मिल पायी। कई अच्छी योजनाएं इनकी ओट में चल गयी। मसलन जनेश्वर मिश्र आवास योजना के तहत चयनित गांव में सीसी रोड बनाने के लिये 40-40 लाख रुपये आवंटित किये। मंडी के माध्यम से जितनी सड़कों के निर्माण हुये, उतनी सड़कें कभी नहीं बनी। विधायक निधि से रोगियों की मदद की जा रही है। उन्होंने कहा कि बुंदेलखंड में कृषि की दुश्वारियों को खत्म करने के लिये कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को शोध का निर्देश दिया गया है। नए साल में बुंदेलखंड में ज्यादा से ज्यादा सोलर एनजी प्लांट लगेंगे। बांदा का मेडिकल कालेज शुरू कर दिया जायेगा। चंदौली में नया मेडिकल कालेज और आजमगढ़ में शुगर प्लांट लगेगा। लखीमपुर खीरी व आजमगढ़ में कृषि विश्वविद्यालय खोलने पर विचार होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जीएसटी की नीतियां ऐसी होनी चाहिये, जिससे राज्य का राजस्व कम नहीं हो। इस तरह की नीति होगी तभी उस पर विचार किया जायेगा। उन्होंने कहा कि भूमि अधिग्रहण के नियम किसानों के हितकारी होने चाहिये। किसानों की अनदेखी वाला भूमि अधिग्रहण नियम समाजवादी स्वीकार नहद्र करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिस तरह समाजवादी एम्बुलेंस सेवा समय से मरीज तक पहुंचती है, वैसे ही पुलिस कैसे पहुंचे इस पर अध्ययन कराया जा रहा है। नए साल में इस अध्ययन रिपोर्ट पर भी अमल किया जायेगा। श्रमिकों के ठहरने के लिये आश्रय बनाने की योजना भी बन रही है। कोई भीख नहीं मांगे, इसके प्रयास किये जा रहे हैं।

मुलायम की नसीहत दोहरायी

मुख्यमंत्री ने कहा कि नेताजी (मुलायम) ने कहा था कि शिलान्यास के साथ उद्घाटन की तारीख घोषित होनी चाहिये, जिस पर अमल का प्रयास होगा। अगले दो साल विकास के लिये चुनौती भरे होंगे, सरकार इस पर खरा उतरने में जुटेगी।

ओबामा की भारत यात्रा का विरोध करेंगे वाम दल

नई दिल्ली। देश के छह वाम दल एकजुट होकर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा का विरोध करेंगे। वाम दल भारत के आंतरिक मामलों में अमेरिका के दखल और भाजपा नीत सरकार की अमेरिका समर्थक नीतियों के खिलाफ 24 जनवरी को देशभर में प्रदर्शन करेंगे। शुक्रवार को नई दिल्ली में भाकपा, माकपा, भाकपा ख्एमएल--लिबरेशन,, एआईएफबी और आरएसपी की बैठक हुई थी।

इसमें 'पश्चिम एशिया सहित अन्य भागों में अमेरिकी आक्रामकता पर रोक', 'भारत के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप पर रोक' और 'अमेरिका--भारत रणनीतिक सहयोग पर रोक' वाले तीन नारों को बुलंद कर प्रदर्शन करने का निर्णय लिया गया। एक संयुक्त बयान में कहा गया कि अमेरिका समर्थक विदेश नीति को आगे बढ़ाना एक स्वतंत्र निर्गुट



विदेश नीति के विपरीत है। यह सब भारतीय और विदेशी एकाधिकार पूंजी के हित के लिए किया जा रहा है।' ताजनगरी के मेहमान बनेंगे ओबामा उन्होंने गणतंत्र दिवस की परेड में मुख्य अतिथि के रूप में बराक ओबामा की उपस्थिति की भी निंदा की। भारत पर बना रहे दबाव इस बयान में कहा गया है कि भारत ने ओबामा प्रशासन के अथक दबाव के कारण ही बीमा क्षेत्र में एफडीआई खविदेशी प्रत्यक्ष निवेश, की सीमा बढ़ाकर 49 प्रतिशत की है। उन्होंने आरोप लगाया कि अपनी दवा कंपनियों को फायदा पहुंचाने के लिए अमेरिका भारत की पेटेंट व्यवस्था को कमजोर करने के लिए दबाव बना रहा है। इससे अमेरिकी कंपनी देश में यह दवाएं ऊंची दरों पर बेचेंगी।

वाराणसी जाएंगे ओबामा, बीएचयू छात्रों से भी होंगे रूबरू।

खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम को खत्म करने, मजदूर कानून अधिकार और पर्यावरण संबंधी कानूनों को कमजोर बनाने के लिए अमेरिका अपने फायदे के लिए लगातार भारत पर दबाव डाल रहा है। इसके साथ ही ओबामा और मोदी अमेरिकी परमाणु उद्योग के फायदे के लिए असैन्य परमाणु दायित्व कानून को कमजोर करने की कोशिश में लगे हुए हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव में रुक जाएगा भाजपा का विजय रथ

पटना। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और जनता दल यूनाइटेड के वरिष्ठ नेता नीतीश कुमार ने कहा है कि बिहार में भाजपा का विजय रथ आकर रुक जाएगा। पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा जनता को झूठे सपने दिखाकर सत्ता में आई है, उसका यह झूठ अब ज्यादा समय नहद्र चल पाएगा। उनका कहना था कि भाजपा के झूठे वादे और दावे अब लोगों की समझ में भलीभांति आ गए हैं। इसका सबूत उन्हें राज्य में इस वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव में मिल जाएगा। यहां होने वाले चुनाव में उनकी हार निश्चित है। जदयू नेता ने कहा कि भाजपा की धीरे-धीरे हवा निकल गई है। उनके इस पाखंड की पराजय 2015 में बिहार में हो जाएगी। नीतीश का कहना था कि भाजपा ने जनता को काले धन को वापस लाने, बेरोजगारों को रोजगार दिलवाने जैसे झूठे सपने दिखाए। बिहार की जनता को भी उन्होंने धोखा दिया क्योंकि भाजपा ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की बात कही थी, जिससे अब वह पीछे हट रही है। सत्ता में आने के बाद भाजपा ने इस सभी मुदध्दों को ताक पर रख दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने विकास के मुदध्दे को ताक पर रख कर धर्मांतरण के मुदध्दे को हवा देकर अपना असली चेहरा लोगों को दिखा दिया है।



केरल में एसजेडी का जदयू में विलय

उन्होंने नाथूराम गोडसे की तारीफ करने पर भी भाजपा की जमकर खिंचाई की। उन्होंने कहा कि यह तमाम बातें वह लोगों का ध्यान विकास से भटकाकर दूसरी जगह लगाने के लिए कर रही है। जनता परिवार के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अब कुछ औपचारिकताएं ही शेष रह गई हैं। बिहार में होने वाले चुनाव के लिए नीतीश का चेहरा सामने रखने के बाबत पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि यह सब उचित समय पर तय किया जाएगा। उन्होंने यहां तक कहा कि भाजपा को बिहार में रोकने के लिए यदि कांग्रेस का भी हाथ थामा जाएगा तो गलत नहद्र होगा। लेकिन यह सब अभी भविष्य की बातें हैं।

Ramagya Distributors Pvt. Ltd.
(Deals in Writing and Printing Papers)
Gwynne Road ,Aminabad ,Lucknow
Phone:0522-4001081,9415018235
We Deal In : *All Writing and Printing Paper Solutions
*Call For Printing and Writing Paper Solutions.

KHUSHI FOUNDATION
Smile for Every Face
C-695,Ist Floor,Sector-6,Indira Nagar,Lucknow-226016,
www.khushifoundation.net

ड्रामे के अलावा कुछ नहीं कर रही मोदी सरकार : मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती ने नरेन्द्र मोदी सरकार को आड़े हाथ लिया। लखनऊ में बसपा के मुख्यालय में आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में मायावती ने केंद्र सरकार को ड्रामेबाज सरकार बताया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार हर मोर्चे पर फेल साबित हुई है। इसका छह माह का कार्यकाल तो सिर्फ छलावा ही साबित हो रहा है।



उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ड्रामा के अलावा और कुछ नहीं कर रही है। इस सरकार ने लोगों को अच्छे दिन का सपना दिखाया लेकिन सरकार सिर्फ चंद पूंजीपतियों के हाथ में खेल रही है। इसका कार्यकाल तो मनमोहन सरकार से भी बेकार है। देश में चारों ओर अराजकता है। सीमा भी जरा भी सुरक्षित नहीं है। सरकार सभी जनहित की योजनाओं पर लापरवाह है। सिर्फ झूठे वायदे कर राज्यों में सरकार बनाने का काम हो रहा है। जनता को धोखे में रखा जा रहा है। सरकार पूरी तरह से देश के पूंजीपतियों का ध्यान रख रही है। इनको लाभ देने के लिए सरकार कानून में भी बदलाव कर रही है।

लंबे समय बाद लखनऊ लौटी बसपा प्रमुख ने भाजपा पर जातिवादी पार्टी होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हाल में ही एक ही जाति के दो लोगों को भारत रत्न दिया गया है। यह जातिवाद विचारधारा वाली पार्टी देश में सांप्रदायिक तनाव फैला रही है। इस सरकार के सात माह के कार्यकाल में दलित व पिछड़ों की उपेक्षा हो रही है। उन्होंने कहा कि देश के दलित तथा पिछड़ों के लिए अपना पूरा जीवन लगा देने वाले बसपा के संस्थापक कांशीराम भारत रत्न मिलना चाहिए था, लेकिन भाजपा ने उनके नाम पर विचार ही नहद्र किया। उन्होंने कहा कि केंद्र के साथ राज्य सरकार भी दलितों के सम्मानों में की अनदेखी कर रही है।

मायावती ने कहा कि केंद्र सरकार की देखरेख में सिर्फ आंतरिक ही नहीं देश की सीमा भी सुरक्षित नहीं है। भाजपा भी केंद्र में रही सभी सरकारों की तरह काम कर रही है। इससे देश की सीमा लगातार कमजोर होती जा रही है। इस सरकार के कार्यकाल में देश जरा भी सुरक्षित नहीं है। उन्होंने कहा कि देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें कम करने पर वाहवाही लूटी जा रही है जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों की कमी के कारण सरकार ने इनके दाम कम किए हैं। सरकार को सात महीने से ज्यादा हो गए हैं लेकिन सरकार अपने वादें को पूरा करने में असफल रही है। अच्छे दिन आने के वादे सपने ही हैं। देश में कालाधन वापस लाने का वादा हवा साबित हुआ है। लोगों के अच्छे दिन का सपना चूर हो गया। सरकार हर मुद्दे पर फेल है। यह सरकार धन्नासेठ तथा पूंजीपतियों के इशारों पर चल रही है। मायावती ने संकेत दिया कि देश पर गुलामी का संकट गहरा गया है।

इसके बाद मायावती के निशाने पर उत्तर प्रदेश सरकार रही। उन्होंने सूबे में धर्मांतरण को केंद्र तथा राज्य सरकार की मिलीभगत बताया। उन्होंने कहा कि साजिश के तहत धर्म परिवर्तन का खेल खेला जा रहा है। यूपी सरकार इस पर मूकदर्शक बनी है। यूपी में कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। बदायूं की घटना से यूपी शर्मसार हुआ है। उन्होंने कहा कि यूपी में अपराधी चरम सीमा पर पहुंच गए हैं। प्रदेश सरकार पहले ही दिन से कानून-व्यवस्था में फेल साबित हुई है। अपने करीब तीन वर्ष के कार्यकाल में सपा सरकार ने जनता को सिर्फ ठगा है। सरकार की हर कार्यशैली विफल रही है। सैफई महोत्सव में धन की बर्बादी हो रही है। जनता का करोड़ों रुपए सैफई महोत्सव में बर्बाद किया जा रहा है। नोएडा के भ्रष्ट इंजीनियर यादव सिंह के बारे में उन्होंने कहा कि उसको भ्रष्टाचार के मामले में जिसने क्लीन चिट दी उससे सवाल पूछा जाए। यूपी में ईमानदार अफसर परेशान हैं। यहां राष्ट्रपति शासन लगाया जाये।

डीजीपी का कम समय में ही काम की छाप दिखाने का वादा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पुलिस के नये मुखिया अरुण कुमार गुप्ता को भले ही काम करने के लिए सिर्फ 31 दिन का ही वक्त मिला है, पर उनके उत्साह में कमी



नहीं हैं। वह उत्साह से लबरेज हैं। उनका कहना है कि समय भले कम है लेकिन उसका सदुपयोग करेंगे और अपने काम की छाप छोड़ेंगे। पुलिस बल के लिए अपने पहले संदेश में उन्होंने कहा कि पुलिस निर्भीक होकर काम करे, उसकी दिक्कत व परेशानी दूर करना हमारी जिम्मेदारी है। डीजीपी मुख्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के बाद कल गुप्ता ने कहा कि जब मैं पुलिस फोर्स में आया तब जो प्राथमिकताएं थी वही आज भी हैं। अपराध के स्वरूप में बदलाव जरूर हुआ है मगर उसके नियंत्रण के तौर तरीके भी बदले हैं। उन्होंने कहा कि देश में डाक्टर और पुलिस की भूमिका बिल्कुल एक तरह की होती है। मरीज को अगर लगता है कि डाक्टर उसके प्रति गंभीर है तो उसका आत्मबल बढ़ जाता है। उन्होंने कहा कि अगर थानों में पुलिस फरियादियों के प्रति गंभीरता दिखायेगी तो आम जनता का पुलिस के प्रति भरोसा बढ़ेगा। रणनीति बना कसेंगे आतंकवाद की नकेल आतंकवाद, लव जिहाद व धर्मांतरण जैसे मुद्दों पर एके गुप्ता रणनीति बनाकर कार्य करेंगे। गुप्ता का कहना है कि आतंकवाद पूरे देश का मुद्दा है, इससे उप्र भी अछूता नहीं है। हम इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से काम करेंगे। पीके फिल्म को लेकर उत्पन्न विवाद के सवाल पर उन्होंने कहा कि यह तो टैक्स फ्री कर दी गयी है, इस पर क्या विवाद।

पुलिस से ताकतवर कोई नहीं

लगातार हो रहे हमले की वजह से पुलिस के घटते इकबाल के सवाल को काटते हुए एके गुप्ता ने कहा कि पुलिस से ताकतवर कोई नहीं है। पुलिस के पास मैन पावर, हथियार और दिमाग है और अगर सबका सदुपयोग कर पुलिस चलेगी तो अपराधियों पर बहुत भारी होगी।

मुझ पर कभी नही पड़ा सियासी दबाव गुप्ता ने सवालों के जवाब में कहा कि मैंने अपनी 38 साल की सेवा में कभी सियासी दबाव महसूस नहीं किया। लोकतंत्र में हर इंसान को अपनी बात कहने का हक है। मैं जो कुछ भी करूंगा, नियमों के दायरे में ही करूंगा।

भू-अधिग्रहण कानून में बदलाव पर उबाल

लखनऊ। भू-अधिग्रहण कानून में बदलाव करने के फैसले को किसान विरोध



ी करार देते हुए लामबंदी तेज हो गई है। दिल्ली में 18 मार्च को प्रदर्शन के अलावा जिला स्तर पर भी आंदोलन होंगे।

संगठनों को लामबंद करने की कमान संभाले भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राकेश टिकैत का कहना है कि किसानों के सामने जटिल स्थिति उत्पन्न हो रही है। जमीन बचाने के लिए एकजुटता न दिखाई तो किसान परिवार भुखमरी का शिकार होने लगेंगे। 18 मार्च को दिल्ली में संयुक्त फ्रंट के तले बड़े प्रदर्शन के अलावा किसान जिलों एवं स्थानीय स्तर पर अपनी ताकत दिखाएंगे। भारतीय किसान आंदोलन संयोजक कुलदीप कुमार का आरोप है कि वर्ष 2013 के कानून में प्रावधान रखा गया था कि सरकार और निजी कंपनियों की संयुक्त योजना के लिए भूमि अधिग्रहण को 80 प्रतिशत किसानों का सहमत होना जरूरी था, लेकिन ताजा बदलाव के बाद किसान अपनी भूमि से मनमाने ढंग से बेदखल किया जा सकेगा।

उधर कांग्रेस व जनता दल यू ने भूमि अधिग्रहण कानून में संशोधन करने का कड़ा विरोध किया है। विधायक पंकज मलिक ने नए अध्यादेश को कारपोरेट तथा औद्योगिक घरानों एवं बिल्डरों के हितों को फायदा पहुंचाने वाला बताया। जदयू सांसद केसी त्यागी ने कहा कि सरकार ने संसद का भी अपमान किया है क्योंकि शीतकालीन सत्र में संशोधित विधेयक के बजाए अध्यादेश ले लाए। इसका हर स्तर पर विरोध होगा, शहरी क्षेत्रों के आसपास रहने वाले किसानों को सर्वाधिक नुकसान झेलना होगा।

किसान नेता नरेंद्र सिंह राणा ने कहा कि भूमि अधिग्रहण कानून में बदलाव की मंशा गंभीर संकेत दे रही है। जिस पर किसान चिंतित है और एकजुटता से हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करेंगे।

मोनिका बेदी के ठुमकों पर नाचा सैफई



लखनऊ। इटावा के सैफई में चल रहे सैफई महोत्व में नये साल का पहला दिन अभिनेत्री मोनिका बेदी के ठुमकों के नाम रहा। मोनिका ने अपनी रंगारंग प्रस्तुति से पंडाल में बैठे लोगों को झूमा दिया और सभी ने मस्त होकर ठुमके लगाये। मोनिका ने पंजाबी गीत बेबी डोल मैं सोने दी सोने दी, मुझे तो तेरी लत लग गई व नागिन डांस पर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

इससे पहले गायक मिस्वाह अली ने सुनो न संगमरमर, सोनू निगम का गीत बिजुरिया से बिजुरिया व झूम बराबर झूम, दमादम मस्त कलंदर गाकर लोगों की खूब तालियां बटोरी। द फील ऑफ क्लासिक बैंड के संगीत पर कलाकारों ने जमकर धमाल मचाया। सूफी गायन ने समां बांधा महोत्सव मंच पर एमए म्यूजिक इंटरटेनमेंट दिल्ली के कलाकार जमील अहमद ने गायन प्रस्तुत किया।

उन्होंने फिल्म जुनून का गीत आज रंग है ए मां रंग है री, दमादम मस्त कलंदर, मोसे नैना मिलाइले, या रब मेरे मौला मेरे, दिल में अली अली, जुबां पे अली अली गाया।

छियालिस हजार बीपीएड डिग्रीधारकों को मिलेगी नौकरी

लखनऊ। नए वर्ष में प्रदेश के 46 हजार उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शारीरिक



शिक्षकों की नियुक्ति का रास्ता साफ होता दिख रहा है। एक माह में नियुक्ति का शासनादेश जारी करने को लेकर मुख्य सचिव के आश्वासन के बाद बीपीएड डिग्रीधारकों का अनशन समाप्त हो गया।

गलन भरी ठंड में नौ दिनों तक गोमती नदी के किनारे आंदोलनरत डिग्रीधारक अपने-अपने जिलों की ओर वापस लौट गए।

नियुक्ति पत्र का शासनादेश जारी करने की मांग को लेकर प्रशिक्षित बीपीएड संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर सैकड़ों प्रदर्शनकारियों ने लक्ष्मण मेला स्थल पर सरकार के खिलाफ लामबंध थे। नवें दिन जिला प्रशासन ने मुख्य सचिव से वार्ता कराई। मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष धीरेंद्र यादव के नेतृत्व में चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने प्रमुख सचिव आलोक रंजन से मुलाकात में डिग्रीधारकों की मांग रखी। धीरेंद्र यादव ने बताया कि मुख्य सचिव ने उच्च प्राथमिक विद्यालयों में एक-एक शारीरिक शिक्षक की नियुक्ति पर अपनी सहमति जताई। उन्होंने प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा को एक प्रस्ताव बनाने की भी बात कही है। एक माह में शासनादेश जारी करने के मुख्य सचिव के आश्वासन बाद डिग्रीधारकों ने अपना अनशन समाप्त करने की घोषणा कर दी है। प्रदेश महासचिव आकाश गुप्ता ने कहा कि एक माह में अगर नियुक्ति का रास्ता साफ होते नहीं दिखाई दिया, तो फरवरी में फिर से लक्ष्मण मेला स्थल पर डेरा डाल आमरण अनशन शुरू करेंगे।

नोएडा बनता जा रहा है आतंकियों के लिए पनाहगाह

नोएडा । राजधानी दिल्ली से सटे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपदों में आतंकी अपना ठिकाना बना रहे हैं। खुफिया एजेंसियों की तरफ से इसको लेकर पिछले कुछ वर्षों में कई बार अलर्ट भी जारी किए गए। इसके बाद भी लोकल इंटेलीजेंस यूनिट सुस्त दिखाई दे रही है। पिछले कुछ वर्षों में दूसरी बार संदिग्ध आतंकी पकड़ा गया है एवं एक बार दो आतंकी मारे भी गए थे। इससे पता लग रहा है कि शहर में कितने आसानी से आतंकी पनाह ले रहे हैं।

पिछले कुछ समय से संदिग्ध आतंकी अब्दुल अजीज शहर में ठिकाना बनाए हुए था, लेकिन लोकल इंटेलीजेंस युनिट को इसकी भनक तक नहीं लगी। गिरफ्तारी के 15 दिन बाद भी पुलिस नहीं पता लगा सकी कि वह शहर में कहां ठिकाना बनाए हुए था। मालूम हो कि 19 दिसंबर को पश्चिम बंगाल पुलिस की टीम ने, एंटी टेरेरिस्ट स्कवायड(एटीएस) की मदद से पश्चिम बंगाल से गिरफ्तार हुआ संदिग्ध आतंकी बर्कतउल्ला के निशानदेही पर उसके साथी अब्दुल अजीज को शहर से गिरफ्तार किया। घाटकोपर बम धमाके के आरोपी की मोरना से हुई थी गिरफ्तारी । नवंबर 2013 में एंटी टेरेरिस्ट स्कवायड की टीम व तमिलनाडु एसआइटी की टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए मोरना बस अड्डे के पास से तौफीक उर्फ अब्दुल्ला को गिरफ्तार किया था। वह मूल रूप से तमिलनाडु का रहने वाला था। वह वर्ष 2002 में मुंबई के घाटकोपर में हुए बम धमाके का आरोपी था। धमाके के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था एवं बाद में उसे जमानत मिल गई थी। वह तमिलनाडु से हत्या व विस्फोटक अधि नियम के तहत भी वांछित चल रहा था।

जनवरी 2009 में मारे गए थे दो आतंकी । दिल्ली में आतंक फैलाने के लिए हथियार सप्लाई करने के लिए जा रहे दो संदिग्ध पाकिस्तानी आतंकियों को जनवरी 2009 में एटीएस की टीम ने पीछा कर मुठभेड़ में मार गिराया था। दोनो आतंकी 25 जनवरी की सुबह सेक्टर 97 में मारे गए थे। आतंकियों का एटीएस की टीम गाजियाबाद से ही पीछा कर रही थी एवं सेक्टर 97 में पकड़ने का प्रयास किया एवं मुठभेड़ में दो आतंकी मारे गए थे। आतंकियों के कब्जे से एके 47 सहित अन्य सामान बरामद हुए थे।

खंडवा से फरार आतंकी के छिपे होने की आशंका रू खंडवा से फरार हुए आंतकियों के भी पश्चिमी यूपी में ही छिपे होने की आशंका है। उनकी गिरफ्तारी के लिए देशभर की एजेंसिया लगी हुई है। यूपी एटीएस की निगाहें भी उन पर हैं। मालूम हो कि बिजनौर में हुए ब्लास्ट में घायल हुई महिला पर इन आतंकियों की मदद करने का आरोप लगा था। उसकी गिरफ्तारी हुई थी। वहद्र महिला के भाई के भी शहर में ठिकाना बनाने की बात सामने आई है। इसके बाद से ही उन आतंकियों के शहर में उनके छिपे होने की आशंका बढ़ गई है।

शताब्दियों पुरानी हैं सेंड आर्ट की परंपरा

इटावाः सेंड आर्ट के अलावा कला से संबंधित विश्व स्तरीय प्रतियोगिता कहद्र देखने को नहद्र मिलती। अमेरिका, कनाडा, चीन, जापान सहित कई ऐसे देश हैं जहां सेंड आर्ट अर्थात रेत-बालू से कलाऔतियां बनाने की इंटरनेशनल प्रतियोगिताएं होती हैं। हालांकि भारत में भी सेंड आर्ट के कई आयोजन होने लगे हैं। यूएस ओपन सेंड आर्ट प्रतियोगिता भी इसी का एक उदाहरण है। यह कहना है सेंड आर्ट में विश्व ख्याति प्राप्त कर चुके मशहूर सेंड आर्टिस्ट सुदर्शन पटनायक का।



सैफई महोत्सव में रेत से कलाऔतियां बनाकर अपनी कला का प्रदर्शन करने पहुंचे सुदर्शन भारत की इस कला को विश्व पटल पर स्थापित कर चुके हैं। दैनिक जागरण से खास बातचीत करते हुए ओडीशा के पुरी के इस प्रख्यात कलाकार ने बताया कि वे कई समुंदर के किनारे, अन्य आयोजनों व प्रतियोगिताओं में लगभग 40 बार ताजमहल बना चुके हैं और सम्मानित भी किए गए हैं। इसी वर्ष पदमश्री सम्मान पाने वाले सुदर्शन पटनायक 25 वर्षों से रेत के साथ कई तरह के प्रयोग कर विभिन्न कलाऔतियां व संदेश देती रचनाएं बना चुके हैं। रेत की कला के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में रेत तो कई जगह है लेकिन पुरी में भगवान जगन्नाथ की औपा से शुरुआत होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बच्चों में भी समंदर किनारे रेत पर घर व अन्य चीजें बनाने की प्रवृत्ति होती है। सुदर्शन ने बताया कि 17वद्र शताब्दी में अमेरिका में सेंड आर्ट की परंपरा शुरू हो गई थी। वे अब तक पचास से ज्यादा देशों में जाकर इस कला का प्रदर्शन कर चुके हैं और पांच बार विश्व चौंपियनशिप भी जीत चुके हैं। रंगीन कलाऔतियों के लिए वे कलर सेंड का प्रयोग करते हैं। सैफई महोत्सव में उन्होंने मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से मुलाकात में सेंड आर्ट की एक कॉफी टेबल बुक भेंट की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि वे सुदर्शन पटनायक को यहां देखकर बहुत प्रसन्न हैं, आने वाले समय में उत्तर प्रदेश में ऐसे अन्य आयोजन कराने का प्रयास करेंगे।

फोटो में ड्रेस, हकीकत में उड़नछू

कानपुर। बेसिक शिक्षा विभाग और उससे संबद्ध स्कूलों की महिमा निराली है। बच्चों को ड्रेस बांटी नहीं और स्कूल के रजिस्टर में उनकी फोटो और हस्ताक्षर कराकर फजी दस्तावेज तैयार करवा लिए। एसडीएम के औचक निरीक्षण में फर्जीवाड़ा पकड़ में आया। उनके आदेश के बाद शनिवार को बेसिक शिक्षाधिकारी ने शिक्षिका को निलंबित कर खंड शिक्षाधिकारी को एफआईआर कराने के निर्देश दिए हैं।

मामला पतारा ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय भदेउना का है। एसडीएम घाटमपुर अमित सिंह बंसल ने विगत 18 दिसंबर विद्यालय का औचक निरीक्षण किया जिसमें ड्रेस वितरण का रजिस्टर जांचा गया तो सभी बच्चों को ड्रेस मिली दशाई गई, रजिस्टर में बच्चों के फोटो और हस्ताक्षर भी थे लेकिन असलियत में ड्रेस नहद्र बांटी गई थी। इसके साथ ही कई अन्य अनियमितताएं पाई गई। इस पर एसडीएम ने शिक्षा विभाग को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए। बेसिक शिक्षाधिकारी राजेंद्र प्रसाद यादव ने प्रध ानाध्यापिका सुधा पांडेय को निलंबित कर खंड शिक्षाधिकारी को ड्रेस वितरण में अनियमितता को लेकर संबधित थाने में मुकदमा दर्ज कराने के आदेश दिए हैं। साथ ही जितना धन ड्रेस के नाम पर व्यय किया गया है, उसकी रिकवरी के आदेश दिए हैं।

बीएलओ के नाम पर मौज कर रहा शिक्षक निलंबित कानपुर भदेउना विद्यालय में ही सहायक शिक्षक मो.शोएब भी एसडीएम के निरीक्षण के दौरान स्कूल से गायब मिले। पता किया गया तो वह विगत एक अक्टूबर से बीएलओ ड्यूटी के नाम पर गायब हैं, लेकिन जब दस्तावेज जांचे गए तो बीएलओ ड्यूटी होने का प्रमाण नही मिला। इस पर उन्हें भी बेसिक शिक्षा अधिकारी ने निलंबित कर दिया है।

सुस्त चल रही बोर्ड परीक्षा की तैयारी

इलाहाबाद । अधिकारियों की शिथिलता के चलते यूपी बोर्ड परीक्षा की तैयारी सुस्त चल रही है। स्थिति यह है कि फरवरी माह में आरंभ हो रही बोर्ड परीक्षा के लिए अभी तक स्कूलों में न कापी पहुंची है और न प्रवेश पत्र। प्रयोगात्मक परीक्षा का काम काफी पीछे चल रहा है। स्थिति यह है कि अभी जिला विद्यालय निरीक्षक को बोर्ड परीक्षा की कापी व प्रवेशपत्र मिलने की कोई सूचना भी नहद्र मिली। इसमें अभी 15-20 दिन का समय लगने की उम्मीद है। अगर यही स्थिति रही तो प्रवेशपत्रों में होने वाली त्रुटियों को सुधारने में दिक्कत आएगी। हर बार प्रवेशपत्रों में नाम, विषय गलत दर्ज होता है, जिसे सुध ारवाने में छात्रों को काफी दिक्कत होती है।

यूपी बोर्ड की हाईस्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा 19 फरवरी से शुरू होगी। परंतु इलाहाबाद मंडल में प्रयोगात्मक परीक्षा की तैयारी अभी पूरी नही हुई। दस जनवरी से शुरू होने वाली प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए अभी परीक्षकों की नियुक्ति नहद्र हो पायी। जिला विद्यालय निरीक्षक कोमल यादव का कहना है कि परीक्षा में काफी समय है, हम तय समय से पहले हर परीक्षा केंद्र में कापी पहुंचवा देंगे। प्रवेशपत्र भी छात्रों को समय से मिल जाएगा, जो त्रुटियां होंगी उन्हें दूर कर दिया जाएगा।

शहादत पर बेपरवाही का कालिख

रायबरेली। आजादी की लड़ाई में रायबरेली का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखने वाली कुर्बानी अपने को संजोने की नहीं तो देख रेख के अभाव की फरियाद तो कर रही है। सात जनवरी 1921 में आजादी की मांग करते हुए हजारों किसानों ने अंग्रेजों की गोली का जिस बहादुरी से सामना किया, इस संजोने में उतनी लापरवाही बरती गई। यहां भारत माता का मंदिर बनाकर शहीद स्थल का दर्जा दिया गया। करोड़ों रुपए खर्च करके इसे पर्यटन का रूप देने की कोशिश भी की गई, लेकिन सही देखभाल न होने के कारण सारी कोशिश कुछ साल में ही बदहाली का शिकार हो गई हैं। यहां बनी सभी इमारतें टूट फूट गई। दीवारें गंदे शेरो-शायरी से भरी दिखती है। सुंदरता के लिए बनाए गए घोड़े, हाथियों और दूसरी मूर्तियों के हाथ पांव गायब हैं। आधे से ज्यादा पेड़ सूख गए हैं।

मिनी जालियांवाले बाग के नाम से मशहूर सई नदी के किनारे इस शहीद स्थल पर आजादी की मांग करते हुए साढ़े सात सौ किसानों ने अपनी जान गंवाई थी। कहा जाता है कि सई नदी का पानी किसानों के खून से लाल हो गया था। आजादी के बाद इसका मान रखा गया और यहां भारत माता का भव्य मंदिर का निर्माण कराकर शहीद स्थल का नाम दिया गया। लेकिन सरकारी मशीनरी की उदासीनता के चलते रायबरेली की धरोहर शहीद स्मारक वीरान होती जा रही है। सालों पहले शहीद स्मारक को संवारने के लिए लाखों का बजट खर्च किया गया था। लेकिन सब बदहाली के कगार पर हैं। सांसद निधि से बना भारत माता का मंदिर शहीद स्थल को पहचान देने के लिए करीब डेढ़ दशक पहले यहां भारत माता का मंदिर बनाया गया था। मंदिर के अंदर भारत माता का चित्र रखा है जिसका कपड़ा एक कोने से फट गया है। चित्र चारों से सीसे घिरा है इसलिए बचा पड़ा है।



पर्यटन स्थल बनाने की कवायद पर बदहाली की साया। रायबरेली विकास प्रधिकरण (आरडीए) के पूर्व उपाध्यक्ष दीनदयाल ने शहीद स्थल का निरीक्षण किया था। इसके बाद रिपोर्ट को शासन स्तर पर भेज इसे शहीद स्थल बनाए जाने की कवायद शुरू की थी। शहीद स्थल के प्रोजेक्ट पर शासन ने मुहर लगा दी। 2005 में यहां निर्माण कार्य शुरू हुआ। इसमें शौचालय बैठने के लिए बेंच, घोड़े हाथी आदि की मूर्तियां। लोगों को बैठने के लिए भवन पानी की टंकियां आदि का निर्माण किया गया था। इसमें से एक भी अपनी सही हालत में नहीं है। निखार लाने के लिए एक बड़े लोहे के पोल पर कई छोटी-बड़ी घंटियां भी लगाई गई थी। कुछ ऐसा ही पत्थरों से उकेरी गई आकृतियों का भी हैं। वहीं दूसरी ओर हरा भरा रखने के लिए पेड़ और बाग लगाए गए थे। एक बाग तो हरी भरी है लेकिन पेड़ अपने घेरे में सूख चुके है।

आराजकतत्वों के दिखते है निशान मात्र पांच से सात सालों में सारे निर्माण पर आराजक तत्वों के निशान दिखते हैं। भवनों में टूट फूट और गंदगी से साथ अश्लील वाक्य हैं तो घोड़े हाथी और दूसरी मूर्तियों के हाथ पांव टूटे हैं। पर्यटन विभाग ने नहीं लिया संज्ञान दो वर्ष पूर्व आरडीए ने तकरीबन 25 करोड़ का प्रस्ताव तैयार कर पर्यटन विभाग को भेजा था। आरडीए द्वारा भेजे गए प्रस्ताव पर मुहर लगने के बाद कई सपनों को हकीकत में परिवर्तित होने के बात कह रहे थे। लेकिन पर्यटन विभाग ने आरडीए द्वारा भेजे गए प्रस्ताव पर संज्ञान ही नहीं लिया।

आरडीए द्वारा तैयार किए गए प्रस्ताव में सई नदी पर पक्का घाट बनाने, पानी की उपलब्धता के आधार पर पर्यटकों को बोटिंग का लुफ उठाने, शहीद स्मारक पर रोशनी के लिए उपकरण, चारों तरफ बाउंड्रीवाल, फलदार वृक्ष, रंग बिरंगी विद्युत झालरों से सजाया सजाने समेत अन्य कार्य प्रस्तावित हुए थे। ताकि राजमार्ग से गुजरने वाले लोग पर्यटन स्थल की रमणीयता देखने के लिए लालायित हों।

पर्यटन विभाग ने वर्ष 2011 में लगभग 40 लाख रुपए सौंदर्यीकरण के लिए स्वीकृत किए, इसमें 34 लाख रुपए खर्च भी कर दिए गए। लेकिन 34 लाख स्मारक की स्थिति में सुधार नहीं कर सके।

750 किसानों ने दिया था बलिदान तकरीबन साढ़े सात सौ किसानों के बलिदान का गवाह मुंशीगंज पुल मिनी जलियांवाला बाग के नाम से विख्यात है। शहीद स्मारक की सुंदरता को निखारने के लिए प्रस्ताव तैयार करके भेजा गया था, लेकिन विभाग द्वारा प्रस्ताव पर मुहर नहीं लगाई गई - शेषनाथ, आरडीए सचिव, रायबरेली।

सम्पादकीय

मुंबई हमले जैसी साजिश

अरब सागर में भारतीय तटरक्षक बल की ओर से घेरी गई पाकिस्तानी नौका में जिस रहस्यमय हालात में विस्फोट हुआ उससे 2008 के मुंबई हमले की याद आ जाना स्वाभाविक है। इस घटना के सारे सूत्र यही बयान कर रहे हैं कि पाकिस्तानी आतंकी मुंबई सरीखे एक और आतंकी हमले के इरादे से भारतीय सीमा में घुस आए थे। छह बरस पहले भी वे मुंबई को लहूलुहान करने इसी तरह आए थे। खुफिया एजेंसियों और तटरक्षक बल की इसके लिए पीठ थपथपाई जानी चाहिए कि उन्होंने जरूरी तालमेल के साथ पर्याप्त चौकसी भी दिखाई। इस तालमेल को बनाए रखने और उसे बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि इसके संकेत दूर-दूर तक नहद्द नजर आते कि पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज आएगा। यह तय है कि वह अरब सागर में घटी घटना में अपने लोगों का हाथ होने से सिरे से इन्कार करेगा। बहुत हुआ तो वह कथित गैर सरकारी तत्वों की ओर इशारा करके कर्तव्य की इतिश्री करेगा। स्पष्ट है कि पाकिस्तान पर अभी और दबाव बनाए जाने की आवश्यकता है। वैसे भी यह नहीं लगता कि वह भारत की ओर से बनाए जा रहे दबाव को महसूस कर पा रहा है। इसकी पुष्टि उसकी ओर से हाफिज सईद और जकीउर रहमान लखवी के प्रति दिखाई जा रही नरमी से होती है। एक आसन्न आतंकी हमले को रोकने में सफल रहने के बाद भारत को और अधिक सतर्क रहने की जरूरत है। इस सिलसिले में इससे इन्कार नहद्द किया जा सकता कि सीमाओं को अभेद्य बनाने के लिए अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। जिस तरह जम्मू-कश्मीर से लगी सीमा से आतंकियों की घुसपैठ का खतरा बना हुआ है उसी तरह समुद्री सीमाएं भी अभी पूरी तरह अभेद्य नहीं बन सकी हैं।

इस पर नए सिरे से गौर किया जाना चाहिए कि क्या 2008 के मुंबई हमले के बाद सीमाओं की सुरक्षा के लिए जैसे कदम उठाए जाने जरूरी समझे गए थे वैसे कर लिए गए हैं? इस संदर्भ में इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि रह-रहकर ऐसी खबरें आती ही रहती हैं कि अभी तक मुंबई की सुरक्षा के लिए भी सभी आवश्यक उपाय नहद्द किए जा सके हैं। भारत सरकार इस तथ्य की भी अनदेखी नहद्द कर सकती कि देश को जितना खतरा पाकिस्तान से घुसपैठ करने वाले आतंकियों से है उतना ही उसके इशारे पर देश में काम कर रहे आतंकी तत्वों से भी और इसका प्रमाण हाल ही में बेंगलुरु में बम विस्फोट की घटना से मिला था। आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे को चुस्त-दुरुस्त बनाने के मामले में भारत को अमेरिका से सबक लेना चाहिए। 9ह्र11 हमले के बाद जिस तरह अमेरिका का सुरक्षा परिदृश्य पूरी तरह बदला गया, कुछ वैसे ही आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता देश में भी है। ध्यान रहे कि 9/11 के बाद अमेरिका में कोई बड़ा आतंकी हमला नहद्द हुआ तो इसीलिए कि उन्होंने संभावित खतरे से निपटने के लिए हरसंभव उपाय किए। भारत के लिए तो इस तरह के उपाय करने के साथ-साथ खुफिया तंत्र को चुस्त-दुरुस्त करने की आवश्यकता कहीं अधिक है, क्योंकि सीमा पार से आतंकवाद को समर्थन-संरक्षण देने का सिलसिला समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है।

मित्रता का रहस्य

एक पाश्चात्य लेखक का कहना है कि मित्रता धन की तरह है, जिसे आसानी से कमा तो सकते हैं, परंतु निरंतर सुरक्षित रखना कठिन है। जब प्रसन्नता का वातावरण होता है, ऐसे समय में मित्र बनते हैं, परंतु क्लेश या पीड़ा की स्थिति में नहीं। गुरु अंगद देव जी का मानना था, 'किसी ओछे व्यक्ति के साथ मित्रता करना ऐसे है जैसे कि पानी पर रेखा खींचना। ऐसी मित्रता निरर्थक और क्षणभंगुर होती है। अज्ञानी और स्वार्थी की मित्रता खतरनाक होती है। आपने देखा होगा अगर आप सौभाग्यवान और संपन्न हैं तो लोग आपके पीछे छाया की तरह लगे रहेंगे, परंतु विपत्ति आने पर किनारा कर लेंगे। स्वार्थी व्यक्ति की मित्रता छाया की भांति है। प्रकाश में साया साथ चलता है, किंतु अंधकार होते ही गायब हो जाता है। मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा। सुकरात के शब्द हैं, 'मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परंतु जो करो तो अंत तक निभाओ।' मित्रता के व्यवहार का प्रतिमान होना चाहिए। नीतिकारों ने सच्चे मित्र के कई लक्षण बताए हैं। जैसे मित्र अपने साथी को पाप करने से रोकता है, उसे हितकर कायरें को अंजाम देने के लिए प्रेरित करता है, उसकी गुप्त बातें किसी को नहीं बताता। मित्र अपने दोस्त की विपत्ति में और उसके कष्ट को दूर करने में सहायता करता है। श्रेष्ठ मित्र वही कहलाता है, जो संपत्ति और विपत्ति में महात्माओं की तरह समान रहता है। गुरु नानकदेव जी का कहना है कि सच्चे मित्र ऐसे होते हैं जिन्हें मिलकर अपने इष्टदेव से मिलने जैसा आभास होता है। एक विश्वसनीय और सच्चा मित्र जीवन के लिए औषधि की तरह हितकारी सिद्ध होता है। सच्ची मित्रता एक ईश्वीय उपहार है, जिससे चरित्र अलंऔत और प्रशंसित होता है। इतिहास सच्चे मित्रों से भरा पड़ा है। जैसे राम और सुग्रीव की मित्रता, कृष्ण और सुदामा की मित्रता, कृष्ण-अर्जुन की मित्रता। सच्ची मित्रता जिसका आधार निस्वार्थ भावना, गुण, सदाचार और विवेक हो, उसमें दैवीय भावना उत्पन्न होती है और ऐसा तब संभव है, जबकि जीवन का आधार ध्यान, मनन और चिंतन हो। यजुर्वेद में वर्णित है-'हे सर्वशक्तिमान मुझे शक्ति प्रदान करो, समस्त जीवित प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सभी जीवित प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं। हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।'

सांस्कृतिक बदलाव का समय

नया दिन, नई सुबह और सूर्य की पहली किरण जीवन में उल्लास, उन्मेष और संभावनाओं से सुरभित मनोभावों के प्रतीक माने जाते रहे हैं। हम सौ साल जिएं, इसका संकल्प रोज करने वाली भारतीय जाति के लोगों के लिए काल या समय एक निरंतर प्रवाह और अविराम गति की लय या छंद की ओर संकेत करता रहा है। इस तरह की सोच में जीवन भी है और मृत्यु भी है, परंतु मृत्यु का भय नहीं है। भय आता है, पर अपने अधूरेपन के अहसास से। जब हममें कोई कमी होती है, कुछ खटकता रहता है तो हम अपने को असमर्थ और असहाय पाते हैं। तब हम पर भय, आशंका और संशय के भूत हावी होने लगते हैं। आज भारतीय समाज में और विशेष रूप से नगरों और महानगरों में ऐसा ही कुछ होने लगा है। आम आदमी के लिए दिन का बीत जाना राहत की सांस देता है। सुबह होती है और मन बेचैन हो उठता है। प्रश्नाकुल मन बार-बार आशंकाओं से भर उठता है-आज क्या होगा? दिन कैसा होगा? किस दिशा से कब और क्या हो जाएगा, कुछ पता नहद्द। आए दिन अपहरण, विस्फोट और व्यतिक्रम इस तरह मन पर छाते जा रहे हैं कि आम आदमी का अपने आप में विश्वास डिगता जा रहा है। आश्वस्ति की खोज बेमानी होती जा रही है। लगता है एक-एक कर सब कुछ हाथ से फिसलता जा रहा है। नियंत्रण खोते चालक जैसी मनस्थिति में ज्यादातर लोग अपने आप को असहाय, विवश और निरुपाय पा रहे हैं। कुछ हैं जो नियंत्रण पाने के लिए नए उपाय ढूंढ़ रहे हैं, साधन जुटा रहे हैं। पर हर नया दिन नई चुनौती लेकर सामने आ रहा है और पहले की तैयारी कुछ छोटी पड़ रही है। आज महानगरीय जीवन एक दुःस्वप्न सरीखा हुआ जा रहा है। संशय, असुरक्षा, अनिश्चितता और तीव्र गति के दबाव आदमी के जीवन और उसके रोजमें के कामकाज में ऐसे तनाव को जन्म दे रहे हैं जो व्यक्तिगत स्वास्थ्य के साथ-साथ सामाजिक सद्भाव को गहरा आघात पहुंचा रहे हैं। सामाजिकता की धुरी होती है परस्पर विश्वास, जिसके सहारे हम अनजाने, अनागत और अनिश्चित क्षणों को ज्ञात, आगत और सुनिश्चित क्षणों में ढालते हैं। आज यह विश्वास या भरोसा हमारे बर्ताव के मुहावरे से बाहर निकलता जा रहा है। आज सब कुछ लेन-देन (एक्सचेंज) होकर रह गया है। इस नए सामाजिक गणित के समीकरण में कुछ भी दांव पर लग सकता है, मोहरा बन सकता है, क्योंकि सब कुछ-नाते, रिश्ते, दोस्ती, वस्तुएं-चीजें हैं और चीजों की अहमियत होती है उनकी कीमत से। हर चीज बिकाऊ है और वाजिब कीमत देकर खरीदी जा सकती है।

'व्यापार' और 'बाजार' अब शायद सामाजिक जीवन को समझने के लिए अधिक सटीक और कारगर रूपक हो रहे हैं। हमारी जरूरतें और हमारी पहचान हम खुद नहद्द तय करते, वरन् बाजार (मार्केट) द्वारा तय होती हैं। बाजार हमसे चलता है जरूर, पर इसी के साथ यह भी उतना ही बड़ा सच है कि बाजार हमें चलाता है। जीवन के बाजारीकरण की यह प्रक्रिया बड़ी तीव्र गति से चल रही है और उपभोक्ता होने के गुमान में हम उपभोग्य बनते जा रहे हैं। यह परिवर्तन समाज के विभिन्न स्तरों को अलग-अलग ढंग से प्रभावित कर रहा है। यह प्रभाव प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही तरह सक्रिय है। जहां प्रत्यक्ष प्रभाव विज्ञापन और मीडिया के संपर्क में आकर हो रहा है, अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज के मॉडल का काम करने वाले लोगों के आचरण को देखने, समझने और उसे आत्मसात करने के द्वारा हो रहा है। आज हर कोई एक द्वीप बनता जा रहा है। संबंधों के दायरे सिकुड़ते जा रहे हैं। हम पढ़े-लिखे और सुशिक्षित होकर उन्मुक्त हो रहे हैं। अब संबंधों के दायरे में परिभाषित नहीं करते, बल्कि दायरे हमारे लिए ब्याज हो गए हैं काम निकालने के। उनका शुद्ध उपयोगितावादी मूल्य ही अब शेष रह गया है। चूंकि अब हमारा 'मैं' ही केंद्रीय होता जा रहा है, 'हम' की एक कड़ी के रूप में उसकी उपस्थिति कमजोर और हल्की पड़ती जा रही है। परिणाम यह कि मैं, समाज, समूह या समुदाय का प्रतिद्वंद्वी या विरोधी बनता जा रहा है। व्यक्ति की अपनी पहचान बनाते-बनाते हम यह अक्सर भुला बैठते हैं कि व्यक्ति अपने आप में समग्र नहद्द है, बल्कि समाज (समग्र) है। ऐसे में वह सहायक व्यवस्था जो समर्थन देती थी और समाज में व्यक्ति के जीवन को संभव बनाती थी, उपेक्षित होकर निजी जीवन को निरंतर अस्त-व्यस्त करती जा रही है। घर, विद्यालय, मित्र मंडली, संचार माध्यम और वाङ्मजगत के साथ बढ़ते संपर्क ने बच्चों और किशोरों के सामने एक नए रुपहले संसार का खाका पेश किया। इसमें भागीदारी के अवसर भी बढ़े, पर साथ ही साथ दबाव भी बढ़ते गए। माता-पिता की बच्चों से आकांक्षाएं बढ़ती गईं और बच्चों की क्षमता से बेमेल होने के कारण बच्चों द्वारा उनकी उपलब्धि का अनुपात असंतोषजनक होता है।

उपयुक्त परिदृश्य भारत में हो रहे उस सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की उस प्रक्रिया का बिंब है जो एकांगी रही है। आर्थिक मूल्यों को तरजीह देकर एवं आंशिक सत्य को पूर्ण सत्य मानकर हम मनुष्य को उसके सामाजिक और प्राऔतिक परिवेश से काटते जा रहे हैं। एक अदूरदर्शी, अल्पकालिक योजना के तहत हमने अपना ध्यान अपने सीमित स्व (सेल्फ) की मांगों की आपूर्ति तक संकुचित कर रखा है। चाहे राजनीति का क्षेत्र लें या शिक्षा का, हर कहद्द इसी दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। आज जो कुछ हो रहा है, वह एक गहराते सांस्कृतिक संकट का संकेत है। तथापि हमारी सांस्औतिक जड़ें शायद अधिक दृढ़ हैं और तभी जीवन मूल्यों के ह्रास के इस अंधे युग में भी हमारा अस्तित्व बना हुआ है। इनके पुनराविष्कार, पहचान और विनियोग से ही हम इस संकट से उबर सकेंगे। सांस्औतिक मूल्यों के पुनराविष्कार को प्रायरू कट्टरवादी पुनरुत्थान कहकर नकार दिया जाता है। उन्हें अप्रासंगिक घोषित कर दिया जाता है। यह प्रवृत्ति सामाजिक जीवन में परिलक्षित भी होती है जब धर्म, भगवान, मंदिर जैसे प्रश्न उछालकर राजनीतिक लाभ लिया जाता है, पर यह छद्म जल्दी ही आवरण से बाहर आकर हमें सचेत कर जाता है। सांस्औतिक मूल्यों की जीवन और सतर्क, संवेदनशील दृष्टि से उनकी तलाश ही हमारा मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

महिलाओं की ताकत

महिलाएं सशक्त होंगी तो समाज को नई दिशा दे सकेंगी। पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश में महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में कई प्रयास हुए हैं। यही कारण है कि अन्य राज्यों के मुकाबले यहां महिलाओं की स्थिति बेहतर है। इस कड़ी में प्रदेश सरकार के दो फैसले महिला सशक्तीकरण की दिशा में मीलपत्थर साबित होंगे। प्रदेश सरकार का पहला फैसला महिलाओं के लिए अलग ग्रामसभा करवाने का है, जहां महिलाओं की समस्याओं और सुझावों को महिलाएं ही सुनेंगी। इसका कारण यह है कि कई मामले पंचायत स्तर के होते हैं, लेकिन महिलाएं ग्रामसभा में अपना पक्ष खुलकर नहीं रख पाती। चाहकर भी उन्हें न्याय नहीं मिल पाता और उनकी आवाज दबकर रह जाती है। अलग ग्रामसभा से महिलाओं में न्याय की उम्मीद बढ़ेगी और वे किसी भी पक्ष पर बेझिझक अपनी बात कह सकेंगी। महिलाओं व पुरुषों की अलग ग्रामसभा होने से कोरम पूरा न होने की समस्या से भी काफी हद तक राहत मिल सकेगी। दूसरा फैसला प्रदेश की हर पंचायत में प्रधान या उपप्रधान में से एक पद महिला के लिए आरक्षित करने का है। इस फैसले से महिलाओं के हित सुरक्षित होंगे व इस वर्ग के लिए बेहतर काम किया जा सकेगा। आमतौर पर शिकायत रहती है कि महिला प्रधानों का काम उनके पति या अन्य परिजन देखते हैं। अगर महिला को उपप्रधान बनने का मौका मिलेगा तो वे पंचायत की कार्यप्रणाली से वाकिफ हो जाएंगी। अगले कार्यकाल में प्रधान बनने से उन्हें कार्य करने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। इससे पहले भी पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव में महिलाओं को 50 फीसद आरक्षण दिया जा चुका है। इससे सरकारी कार्यों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। पंचायत व प्रदेश के विकास में वे सहभागी बन रही हैं। वैसे भी प्रदेश की महिलाओं ने हर क्षेत्र में खुद को साबित कर दिखाया है। खेल हो या शिक्षा या राजनीति या कोई और क्षेत्र, हर जगह प्रदेश की महिलाओं ने दमदार उपस्थिति दर्ज करवाई है। मौका मिलने पर उन्होंने कभी निराश नहद्द किया है। इन फैसलों से महिलाओं को उनका अधिकार दिलाने की दिशा में सकारात्मक पहल माना जा सकता है। महिलाओं का भी दायित्व है कि इस जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से अंजाम देकर सरकार की पहल को सार्थक बनाएं। कहीं ऐसा न हो कि उनके नाम पर पति या परिजन काम करके पंचायतों के कार्य करवाते रहें। इसके लिए उन्हें खुद ही कदम बढ़ाने होंगे और आगे बढ़कर आना होगा।

26/11 जैसा आतंकी हमला दोहराने की साजिश नाकाम

नई दिल्ली। भारतीय तटरक्षक बल ने



सतर्कता और चौकसी से पाकिस्तान की एक और नापाक हरकत की साजिश को नाकाम कर दिया है। विस्फोटक लेकर अरब सागर में भारत की ओर आ रही एक नौका का पीछा किए जाने पर उस पर सवार संदिग्धों ने नौका में विस्फोट कर दिया। इसके बाद नौका डूब गई। बताया जा रहा है कि दो संदिग्ध आतंकवादी भी विस्फोट के बाद समंदर में कूद गए।

पाकिस्तान की ओर से यह हरकत मुंबई हमले की छठी बरसी के करीब डेढ़ महीने बाद की गई है। मुंबई हमले के लिए भी दस पाकिस्तानी आतंकी कराची से नौका के जरिए ही पहुंचे थे। 11नवंबर, 2008 के उस हमले में 166 लोग मारे गए थे।

रक्षा मंत्रालय के अनुसार 31 दिसंबर को खुफिया रिपोर्ट मिली थी कि कराची के निकट केती बंदर से मछली मारने वाली एक नौका अरब सागर में कुछ अवैध गतिविधियों की साजिश कर रही है। सूचना के आधार पर तटरक्षक बलों के जहाज तथा विमानों ने उसी रात एक ऑपरेशन चलाया गया। उस क्षेत्र में मौजूद तटरक्षक जहाज को चौकसी तथा निगरानी के लिए मोड़ दिया गया। मध्य रात्रि को पोरबंदर से करीब 365 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिण में बिना लाइट वाली एक संदिग्ध नौका दिखी। तटरक्षक जहाज ने नौका के क्रू और कागी को जांच के लिए रुकने की चेतावनी दी। लेकिन नौका ने भारतीय जल सीमा से भागने की कोशिश में अपनी गति और तेज कर दी।

तटरक्षक जहाज ने करीब एक घंटे तक पीछा करने के बाद चेतावनी फायरिंग कर नौका को रुकने पर मजबूर कर दिया। लेकिन नौका पर सवार चार लोगों ने तटरक्षक बलों के साथ जांच में सहयोग करने की सभी चेतावनियों की अनदेखी की। इसके तत्काल बाद नौका क्रू के सदस्य निचले डेक कंपार्टमेंट में छिप गए और नौका में आग लगा दी। इसके कारण एक विस्फोट हुआ और आग भड़क गई। खराब मौसम, तेज हवा तथा अंधेरे के कारण नौका पर सवार लोगों को बचाया या पकड़ा नहीं जा सका। जली हुई नौका एक जनवरी को तड़के डूब गई। लश्कर का मास्टरमाइंड है अब्दुल सुब्हान, नया मॉड्यूल तैयार करने की थी जिम्मेदारी। रक्षा मंत्रालय के बयान में कहा गया है कि तटरक्षक जहाज तथा विमान उस इलाके में संभावित किसी जीवित की तलाश में ऑपरेशन चला रहे हैं। समुद्र की ओर से आशंकित खतरे की चेतावनी के बाद तटरक्षक बल तथा अन्य सुरक्षा एजेंसियां जलीय सीमा तथा तटीय क्षेत्रों में पिछले करीब दो महीने से काफी सतर्कता और चौकसी बरत रहे हैं।

लखवी मामले की जल्दी सुनवाई चाहता है पाकिस्तान

इस्लामाबाद। पाकिस्तान सरकार ने मुंबई हमला मामले के मास्टर माइंड जकीउर रहमान लखवी के मुकदमे की सुप्रीम कोर्ट से जल्दी सुनवाई करने की मांग है। वर्ष 2008 में 26ध 11 को हुए इस हमले के बाद से ही भारत-पाक के रिश्ते सुधर नहद्र पा रहे हैं।



मीडिया की खबरों में कहा गया है कि पाकिस्तान के गृह मंत्री चौधरी निसार अली खान ने लखवी की हिरासत पर स्थगन आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। इस्लामाबाद हाई कोर्ट ने सोमवार को मुंबई आतंकी हमला मामले में लखवी को हिरासत में रखने की सरकारी अधिसूचना रद कर दिया था। अपनी गिरफ्तारी के खिलाफ लखवी ने हाई कोर्ट से गुहार लगाई थी। लखवी को कानून व्यवस्था बनाए रखने के जारी आदेश के तहत गत 19 दिसंबर को हिरासत में लिया गया था। उसे एक दिन पहले ही आतंक निरोधक अदालत से मुंबई हमला मामले में पांच लाख रुपये के मुचलके पर जमानत मिली थी। वह अपहरण के एक मामले में अभी 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में अदियाला जेल में है।

लखवी ने कसाब को जिंदा बताकर पाई थी जमानत

लखवी को वर्ष 2009 के फरवरी में गिरफ्तार किया गया था और छह अन्य लोगों के साथ उसी साल 25 नवंबर को उसके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया था। उस पर मुंबई आतंकी हमला मामले की साजिश रचने और हमले को अंजाम देने के सिलसिले गिरफ्तार किया है। माना जाता है लखवी लश्कर -ए तैयबा का अभियान प्रमुख था। भारत लश्कर को ही मुंबई हमले का गुनहगार मानता है।

विश्वकप टीम से बाहर हो सकता है यह भारतीय धुरंधर

अहमदाबाद। अगले महीने ऑस्ट्रेलिया



और न्यूजीलैंड में शुरू होने वाले विश्व कप से पहले भारतीय टीम को जबरदस्त झटका लग सकता है। भारत के ऑलराउंडर खिलाड़ी रविंद्र जडेजा चोटिल होने के कारण विश्वकप से बाहर हो सकते हैं। सूत्रों की मानें तो रविंद्र जडेजा कंधे की चोट से जूझ रहे हैं और इस कारण वो विश्वकप से बाहर हो सकते हैं। टेस्ट सीरीज खेलने के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरे पर गए रविंद्र जडेजा चोट के कारण छह से सात सप्ताह के लिए क्रिकेट से दूर हो सकते हैं। अगर रविंद्र जडेजा टीम इंडिया से बाहर होते हैं तो इसका सबसे ज्यादा फायदा अक्षर पटेल को होगा। जडेजा के चोटिल होने के बाद अक्षर पटेल को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 6 जनवरी से शुरू होने वाले आखिरी टेस्ट में भी खेलने का मौका मिल सकता है।

6 जनवरी को ही बीसीसीआई की चयन समिति ट्राई सीरीज और विश्वकप के लिए भारतीय टीम का चयन करेगी। 14 फरवरी से शुरू होने वाले विश्व कप के लिए भारत की ओर से 30 संभावित खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। भारतीय टीम का चयन करने से पहले बीसीसीआई जडेजा के फिटनेस का अंतिम फैसला आने का इंतजार कर रही है। अगर जडेजा अनफिट होते हैं तो बीसीसीआइ आइसीसी से प्रतिस्थापन की नीति में बदलाव करने के लिए आग्रह कर सकती है।

अगर बीसीसीआई के आग्रह को आइसीसी स्वीकार कर लेती है तो जडेजा के अनफिट होने पर भी भारतीय टीम में शामिल किया जाएगा और जडेजा विश्वकप शुरू होने से पहले फिट नहद्र हुए तो टीम में अक्षर पटेल को मौका दिया जा सकता है।

वर्ल्ड कप के लिए टीम इंडिया के संभावित 30 खिलाड़ीः महेंद्र सिंह धौनी, शिखर धवन, रोहित शर्मा, आजिंक्य रहाणे, रॉबिन उथप्पा, विराट कोहली, सुरेश रैना, अंबाती रायुडू, केदार जाधव, मनोज तिवारी, मनीष पांडे, रिद्धिमान साहा, संजू सैमसन, रविचंद्रन अश्विन, परवेज रसूल, करन शर्मा, अमित मिश्रा, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, इशांत शर्मा, भुवनेश्वर कुमार, मोहम्मद शमी, उमेश यादव, वरूण अरोन, धवल कुलकर्णी, स्टुअर्ट बिन्नी, मोहित शर्मा, अशोक डिंडा, कुलदीप यादव और मुरली विजय।

प्रणब ने पूछा था, भूमि अधिग्रहण पर अध्यादेश की जल्दी क्यों?

नई दिल्ली। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जमीन अधिग्रहण संबंधित अध्यादेश को मंजूरी देने से पहले केंद्रीय कैबिनेट से पूछा था कि आखिर इस मामले में इतनी जल्दी क्यों है? राष्ट्रपति ने सरकार से स्पष्टीकरण लेने के बाद ही अध्यादेश पर हस्ताक्षर किए। वित्त मंत्री अरुण जेटली ने राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से इस अध्यादेश की जरूरत और उस पर उठ रहे सवालों पर उन्हें पहले संतुष्ट किया। इसके बाद बुधवार यानी बीते साल के आखिरी दिन राष्ट्रपति ने आर्थिक सुधारों के लिए जरूरी बताए जा रहे इस विधेयक पर हस्ताक्षर किए। दरअसल, राष्ट्रपति की तरफ से नई सरकार गठन के बाद पहले ही स्पष्ट कर दिया गया था कि विधेयक संसद में पारित न होने की सूरत में अध्यादेश लाने की जरूरत और प्रासंगिकता पर वह विमर्श जरूर करेंगे। सूत्रों का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उसी समय व्यवस्था कर दी थी कि यदि अध्यादेश लाने की जरूरत पड़ती है तो संबंधित मंत्री राष्ट्रपति को खुद जाकर उसकी बारीकियों से अवगत कराएगा। प्रणब मुखर्जी पूर्ववती संप्रग सरकार के संकटमोचक और पूर्व वित्त मंत्री भी रहे हैं। वकील होने के साथ सरकारी फैसलों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही है।



इसलिए, राष्ट्रपति बनने के बाद से ही वह रूल-बुक के हिसाब से चल रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी राष्ट्रपति के प्रशंसक रहे हैं और उन्हें कई सार्वजनिक भाषणों में कुशल राजनेता और काबिल व्यक्ति करार देते रहे हैं। लिहाजा, सरकार और राष्ट्रपति भवन के बीच केमेस्ट्री ठीक रखने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय और राष्ट्रपति भवन दोनों ही कोई कसर नहीं छोड़ते। कोयला और बीमा अध्यादेशों या अन्य पर सरकार के संबंधित विभाग के मंत्री पहले ही राष्ट्रपति को जाकर पक्ष समझाते रहे हैं। मगर भूमि अधिग्रहण अध्यादेश पर सरकार की तरफ से राष्ट्रपति से चर्चा नहद्र हुई।

दरअसल, यह अध्यादेश तकनीकी रूप से ग्रामीण विकास मंत्रालय से संबंधित है। मगर वास्तव में इसके मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह इस अध्यादेश के बारे में ज्यादा परिचित ही नहद्र थे। कैबिनेट में यह लाने से थोड़ा पहले ही उन्हें इस बारे में पता चला। वित्त मंत्री अरुण जेटली ही इसका पूरा ख्याल रख रहे थे। इसीलिए, अध्यादेश जब राष्ट्रपति की मुहर के लिए पहुंचा तो पहले उन्होंने वित्त मंत्री अरुण जेटली को बुलाया। जेटली ने उन्हें पूरी जानकारी दी तभी राष्ट्रपति ने इस पर मुहर लगाई। गौरतलब है कि सरकार ने साफ कह दिया है कि आर्थिक सुधार अब नहद्र रुकेंगे। विपक्ष ने संसद में अड़ंगा डाला तो वह जनता के भले के लिए अध्यादेश का मार्ग बेमुरव्वती से तय करेगी। भूमि अधिग्रहण अध्यादेश के तहत पांच वर्ग बनाए गए हैं, जिसमें भूमि अधिग्रहण कानून बिल्कुल लागू नहीं होगा। औद्योगिक गलियारा, बुनियादी ढांचा, सामाजिक बुनियादी ढांचा, गांवों में बिजली-सड़क की परियोजनाओं के लिए किसानों से जमीन लेने के लिए उनकी सहमति की जरूरत तो नहीं होगी और समझौते की कड़ी शर्तों को मानने के लिए भी वे बाध्य नहीं होंगे।

अमेरिका ने उत्तर कोरिया पर लगाए नए प्रतिबंध

वाशिंगटन। सोनी पिक्चर्स एंटरटेनमेंट पर कथित साइबर हमले को लेकर चल रहे विवाद के बीच अमेरिका ने उत्तर कोरिया पर नए प्रतिबंध लगाए हैं।



राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा संबंधित दस्तावेज पर हस्ताक्षर के यह अमल में आ गया। प्योंगयांग ने इन आरोपों को निराधार बताया है।

अमेरिका ने उत्तर कोरिया की तीन कंपनियों को निशाना बनाया है। इनमें रिकेनिसेंस जनरल ब्यूरो (आरजीबी), कोरिया खनन विकास व्यापार निगम और तांगुम व्यापार निगम और इनके 10 शीर्ष अधिकारी शामिल हैं। प्रतिबंध की वजह से ये कंपनियां और उनके अधिकारी अमेरिका या वहां के नागरिकों के साथ वित्तीय कारोबार नहद्र कर सकेंगे। अमेरिका के वित्त मंत्री जैकब ल्यू ने बताया कि नई पाबंदियों की वजह से उत्तर कोरिया की प्रमुख कंपनियां पहले से ज्यादा अलग-थलग पड़ जाएंगी और उनकी महत्वपूर्ण गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित होंगी।

व्हाइट हाउस की ओर से जारी बयान के मुताबिक सोनी पिक्चर्स एंटरटेनमेंट पर उत्तर कोरिया द्वारा किए गए साइबर हमले के जवाब में यह पहला कदम है। सोनी द्वारा कोरियाई नेता किम जोंग उन की हत्या के प्रयास पर 'द इंटरव्यू' नाम से हास्य फिल्म बनाई गई है। अमेरिका का आरोप है कि इस वजह से प्योंगयांग ने सोनी पर साइबर हमले किए।

Top Ten Facts On Blindness

1. Globally, every five seconds, a person goes blind.
2. Nine out of every ten blind persons live in developing economies.
3. According to the National Health Policy document of the Government of India, 1983, "One of the basic human rights is the right to see".
4. Despite this lofty aim, India's blind population totals a whopping 12 million.
5. More than two thirds of India's visually handicapped live in Andhra Pradesh, Orissa, Madhya Pradesh, Maharashtra, Rajasthan, Tamil Nadu and Uttar Pradesh.
6. Cataract, the leading cause of visual disability, accounts for 62.6 percent of blindness in the country.
7. Other causes are glaucoma, macular degeneration, posterior segment pathology, retinal detachment, corneal opacities, retinitis pigmentosa, and surgical complications.
8. A largely undocumented cause for blindness in India is diabetic retinopathy, especially in the working middleclass. The extent of the problem, which can be prevented with good glycemic control, is yet to be estimated.
9. The National Programme for Control of Blindness, launched in 1976, aims to reduce the overall blindness prevalence rate from 14 blind persons per 1000 population to 3.
10. The programme focuses on controlling avoidable blindness; providing high quality eye care to affected persons, especially rural poor; increasing the number of cataract operations and reduction in backlog by screening all population over 50 years.

About Cataract : Cataract is derived from the Greek word cataraetos, which describes especially running water. Rapidly running water turns white, as do nature of cataracts. The lens is a crystalline transparent structure, situated within the eyeball composed of protein and water. As long as the lens is transparent we are able to see the world. Any factor that leads to a loss of transparency of the lens can cause cataract.

Complete Health Care Under One Roof

KHUSHI MEDICAL CLINIC & RESEARCH CENTRE

Dr. Dwivedi's

KHUSHI MEDICAL & RESEARCH CENTER

(A Multi-Speciality Medical-Health Center)

SHOP-15/107, 15/25, Ganesh Market, , Near C-Block Chauraha, Opposite Hanuman Mandir, Indira Nagar, Lucknow-226016

Phone : 9450097512 * 8090111100

E-mail: kmrc.india@gmail.com

PATHOLOGY

Dr Lal PathLabs

भारत का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय पैथालाजी नेटवर्क

HOMEOPATHY

Khushi Homeopathic Clinic & Research Center

Lucknow's Best Homeopathic Research Center for Chronic Diseases

PHYSIOTHERAPY

Khushi Physiotheraphy Clinic & Research Center

Finest Physiotherapy Clinic with Modern Machines and Complete Rehabilitation

Homeopathic Consultation • Pathology • Physiotherapy

Homeopathic Pharmacy • Diagnostics • Health Check-ups

Swine Flu / Swine Influenza / Hog Flu / Pig Flu

Swine influenza or 'Swine flu' is a type of influenza caused by the Type A swine influenza virus (SIV), that commonly infects pigs.

During the 1918 flu pandemic, pigs and humans became sick and it was then that the connection came to be clearly noticed. For the next 60 years, H1N1 had a unique dominance as the cause of swine flu. Between 1997 and 2002, influenza-causing new strains emerged in North America, some of which comprised of reassorted genes derived from human, swine and avian viruses. These strains of viruses have grown to be the major cause of swine flu in Northern America.

There was a massive effort at vaccination after the 1918 pandemic but it was plagued by reports of developing a neurological condtion that leads to weakness of muscles, called Guillain-Barre syndrome, that sometimes had fatal outcomes.

The name influenza is derived from Italian word 'influenza', that means "influence" (Latin: influentia). The word 'flu' is derived from the word 'fluc' that means 'airway passage' of lungs.

Tha major flu outbreaks in the world have included the Spanish Flu, Asian flu and the Hong Kong Flu.

Pigs are unique in that they can act as hosts for strains of influenza virus that infect three different species- humans, birds and needless to say, pigs! These strains of viruses exchange their genes, while in the pig, to give rise to new and dangerous combination of viral strains. In China and in Vietnam the avian influenza virus H3N2 is also found in pigs. The avian strain H5N1 has also been detected in pigs in China. This has resulted in fears over a new strain of virus against which the human race has no immunity and can, therefore, cause innumerable deaths. The swine population becomes a potent reservoir of influenza viruses which can bid their time and attack humans when the latter's immunity is low.

It must be noted that direct transmission from pigs to humans is extremely rare and that only 12 cases have been reported in the U.S.A since 2005. Transmission of SIV from the pigs to humans can however result in the formation of antibodies against the virus resulting in a condition called zoonosis.

In humans, 'swine flu' is known to be caused by H1N1, H1N2, H3N1, H3N2 and H2N3 subtypes of the type A influenza virus, while in pigs the disease is caused by the widely prevalent strains H1N1, H3N2, and H1N2.

The recent 2009 flu outbreak is due to a new strain of subtype H1N1 not previously reported in pigs. Analysis has revealed that two strains of the subtype H1N1 are involved in the formation of this new strain . The origin of this new strain is still being investigated. It is alleged to have evolved in the eggs that scientists use to develop vaccines. But what makes it potent is that it is not a zoonotic infection but a human to human transmittable disease.

Swine influenza is common in the midwestern United States, Mexico, Canada, South America, Europe (UK, Sweden, Italy), Kenya, Mainland China, Taiwan, Japan and other regions of eastern Asia.

There has been a global preparedness to tackle the swine flu thanks to the measures taken against avian flu (or bird flu) that affected several parts of the world. US President Barack Obama has said "We are closely monitoring the emerging cases of swine flu in the United States, and this is, obviously, a cause for concern and requires a heightened state of alert. But it's not a cause for alarm."

The World Health Organisation issued a statement that there is currently no vaccine for checking swine flu and it would take not less than six months to develop such a vaccine. The vaccine is reported to be ready by June 2009.

Stem Cell Breakthrough in the Eyes Can Replace Corneal Transplantation in Future

The research being spearheaded by Hyderabad-based Dr. Sayan Basu, consultant corneal surgeon and scientist, L V Prasad Eye Institute (LVPEI) and Prof. James L. Funderburgh of the University of Pittsburgh School of Medicine in the US.

According to the research scientist, curing the potentially blinding haze of a scar on the cornea may be as simple as growing stem cells from a tiny biopsy of the undamaged eye of patient and then placing them on the injury site.In an exclusive interview with Medindia, Dr. Sayan Basu talks about the research and how it is going to change the lives of thousands of blind people.

1. Could you tell us about the experiment and the breakthrough result?

The cornea is the transparent front part of the eye and it covers the iris and pupil, and anterior chamber, and it functions like a lens that allows the light to enter and contributes to 65 - 75 percent of the eye's total focusing power Therefore, damage to it lead to cloudiness or haziness that makes it hard or impossible to see and the body usually responds to corneal injuries by making an opaque scar tissue.

We had previously developed a technique to obtain ocular stem cells from tiny biopsies at the surface of the eye and a region between the cornea and sclera known as the limbus. Removal of tissue from this region heals rapidly with little discomfort and no disruption of vision.

After collecting biopsies from banked human donor eyes, we expanded the numbers of cells in a culture plate using human serum to nourish them. We conducted several tests to verify that they these cells were, in fact, corneal stem cells.

We then tested the human stem cells in a mouse model of corneal injury. They used a gel of fibrin, a protein found in blood clots that are commonly used as a surgical adhesive, to glue the cells to the injury site. We found the scarred corneas of mice healed and became clear again within four weeks of treatment, while those of untreated mice remained clouded.

2. What are stem cells?

Stem cells are mother of all cells as they can divide and become any specialized cell of the body. Their discovery has given modern medicine the possibility of miraculous cure for most chronic diseases. However they are still in the research phase and much of the work that is being done in various labs of the world needs to be validated by others before they will be accepted from for treatment.

One such application is the eye is to treat corneal blindness that currently requires corneal transplantation.

3. Could you give us latest details of the pilot-clinical trial?

The clinical trial is intended to confirm that stromal stem cells can indeed be isolated from tiny limbal biopsies in eyes of patients who have corneal scars and that the procedure of isolating these cells refining them in the laboratory and placing them back in the same eye is safe.

We are also trying to figure out the dosage of cells needed to achieve the desired therapeutic effects. This pilot-clinical trial will also have a control arm which will not receive any stem cells so that we can conclusively show what difference the stem cells are making.

This trial is being done on 5 patients in each group and all patients will be followed for 6-months. We expect the trials to be completed by 2015. We believe, the therapy would bring dramatic reduction in blind people

4. When did you start this experiment? How did you get involved in this experiment?

Corneal scarring is a major cause of blindness in India. In fact most corneal transplantations in our country are performed for this reason. However, the waiting list for corneal transplantation is very long as there are not enough eye banks in our country to collect and store donated corneas.

There are, according to recent estimates, 1-2 lakh (1,00,000- 2,00,000) people who need corneal transplantations in India at present but only 10,000 to 30,000 transplantations take place every year. This huge gap in supply and demand leads to further increase in the backlog and burden of corneal blindness.

As a corneal transplant surgeon, I believe that it is almost impossible to bridge this gap by increasing Eye-banking infrastructure or by training more corneal surgeons in our country. This is because corneal transplantation itself is not the end of the story. People with transplants need lifelong follow-up and medical care. Many grafts reject and fail with time.

Therefore, I have been interested in developing an alternative to corneal transplantation that can address both limitations of this approach, namely, need for donor tissue and risk of rejection. I believe that stem cell therapy holds the key to solving the problem of corneal blindness in India and not corneal transplantation and that we can achieve this by using the patients own stem cells. I have been involved with basic scientists working on ocular stem cells since 2010 and have been involved in this project since 2011.

5. Could you tell us more about the technique that is used to obtain ocular stem cells from tiny biopsies?

The technique of retrieving cells from the eye is known as limbal biopsy. Limbus is the area between the white (sclera) and black (cornea) part of front of the eyeball.

In our study we described an atraumatic method of obtaining a tiny biopsy from the limbal area, which can be performed under topical anesthesia without requiring injections in the eye. The limbal tissue is then transported to the laboratory where using the technique I have developed the stromal cells are separated from the epithelial cells. These cells are then purified over several passages to yield a higher number of highly potent stromal stem cells in a few of days. Then these cells are ready for transplantation. The technique of transplantation is also completely novel and can be performed under topical anesthesia and takes no more than a few minutes. In this technique the superficial epithelial layer of the cornea is scraped off and the cells are layered on the cornea over the scarred area as a gel. This is done by mixing the cells in one of the liquid components of biological glue called fibrin glue that is routinely used in ophthalmic surgery. As the gels with the stem cells sticks to the cornea it is covered with a contact lens and the procedure is complete.

Typically it takes no more than a month for the cells to act on the corneal wound and render it completely transparent. Patients will need only prophylactic antibiotics postoperatively for a week when the contact lens is taken off. Since these are the patients' own cells there is no need of long-term medications or risk of rejection. Also since this technique requires no sutures, there are no suture related problems post-operatively.

6. How has your association with Prof. James L. Funderburgh of the University of Pittsburgh School of Medicine in the US helped in this experiment?

Professor James Funderburgh discovered stem cells in the corneal stroma, which were capable of reversing corneal opacification. We decided to work with him so that we could use his expertise in this field to develop a stromal stem cell based method of treating corneal blindness as an alternative to corneal transplantation.

I visited his laboratory in Pittsburgh, USA and worked with him for one year between August 2012 and July 2013 as his research associate. Together we developed a minimally invasive way of obtaining the stromal stem cells from human eyes. We also showed that these cells have stem cell characteristics and are capable of restoring transparency to an experimental model of wounded cornea. These results were published recently.

The clinical implication of this research is that we have established a reliable technique of isolating potent stromal stem cells from human eyes that can be used to reverse and prevent corneal scarring and furthermore that these cells can be obtained from the eyes of the patient himself or herself. Thus there will be no need for donors or risk of rejections because the stem cells could be obtained from the patients themselves.

About Dr. Sayan Basu: he is currently Consultant Corneal Surgeon and Scientist at L V Prasad Eye Institute (LVPEI) in Hyderabad, India. His research interests involve developing stem cell based therapies for corneal diseases like corneal scarring from infection or trauma. He performs about 300 corneal transplants every year. He has over 40 international peer reviewed scientific publications and is also on the editorial board of the British Journal of Ophthalmology. He did his under-graduation and post-graduation from Kolkata in India.

Is Varicocelectomy the Answer to Painful Varicoceles in Men?

There are many causes of painful scrotum and the presence of a varicocele is one such cause. Varicoceles are abnormal enlargements or dilations of veins within the scrotum that surround the male spermatic cord. These are diagnosed either clinically or by an ultrasound. Sometimes surgery if performed for varicoceles will give relief from pain. However this is not the rule as there are instances where the pain never goes away despite the surgery. Not many studies have been done to look at this issue

To address the above issue an interesting study has been published in the Indian Journal of Urology entitled, "Painful varicoceles: Role of varicocelectomy," authored by Nitin Abrol, Arabind Panda and Nitin S. Kekre. The article discusses the combined result gathered by various research groups on varicoceles and the role of surgical treatments for varicoceles for painful scortum.

Effectiveness of Surgery for Painful Scortum due to Varicocele

Varicocele is a benign condition but can cause pain and sometimes affect the fertility of men as it can lead to low sperm count. It is estimated that the prevalence of varicoceles pain is around 2-10 percent. Currently, surgical varicocelectomy is one of the options available for the treatment of varicocele that is causing symptom. In all of the scientific studies conservative treatment is advocated for varicoceles if they cause pain. This includes scrotal support, oral non-steroidal anti-inflammatory drugs and limitation of physical activity like lifting weights and strenuous activities. If this fails to resolve the problem surgery maybe advised.

The current reviewed article mentions that only 5 of the 119 men responded well to conservative treatment. It also emphasizes that factors such as duration, type and intensity of pain are to be considered by the physician before advising any treatment. Research has revealed that the success rate of surgery is much more when the duration of pain exceeds 3 months. Varicocelectomy is found to be most effective for pain when the patient involved is carefully selected. The success rate in such cases is about 80 percent. Overall, there are many studies suggesting that surgical varico celetomy has fewer complications and recurrences of the disease have also been reported to be low. However, a lot more continued research and randomised studies with longer follow up have to be carried out to answer the question as to how effective varicocelectomy is, in treating painful scrotum with varicoceles.

What is Surgical Varicocelectomy?

Treatment of varicocele using surgery is known as varicocelectomy. Surgical varicocelectomy is a minimally invasive surgery and also an effective one. It is divided into subtypes such as laparoscopic, trans venous percutaneous embolization, retroperitoneal, inguinal and sub-inguinal varicocelectomy.

Varicocelectomy

Currently the best method advised to treat varicoceles is by using an operating microscope and taking the sub-inguinal route. The surgery is performed through a small incision made below the pubic hairline. The spermatic cord is elevated and the magnification of the operating microscope is used to identify the abnormal veins, which are then litigated. This is done while testicular arteries, lymphatic channels and nerves are preserved. Finally the incision is closed. This approach gives the best results especially when varicoceles cause low sperm count. Varicocele is estimated to be responsible for approximately 40 percent cases of primary male infertility (where a couple has not conceived a child after at least one year of trying) and 80 percent cases of secondary male infertility (where a couple has conceived at least once but are not able to again).

Optimum temperature, which is essential for sperm production, is maintained by the venous plexus called pampiniform plexus as they cool down blood in the testicular artery before it enters the testicles. This results in the scrotal temperature being 2 to 3 degrees lower than the body temperature. Once the veins are dilated as in varicoceles they fail to regulate the scrotal temperature.

Treat H1N1 as Just Another Flu, Say Experts

"Indian Medical Association (IMA) endorses the views of WHO and ministry of health, government of India, that Influenza A H1N1, commonly known as swine flu, should be treated like any other normal flu," the association informed.

Swine flu is just like an ordinary flu. Symptoms of which are fever, cough, sore throat, bodyaches, and malaise. Rarely, they are nausea, vomiting, diarrhoea and rashes.

Experts say, the drop in temperature has led to increase in the number of cases but they will drop once the weather clears out.

Flu is diagnosed when a person suffers from cough and cold. Swine flu patients don't require antibiotics. But sore throat is not a sign of flu. A person who has cough and cold with breathlessness requires hospitalisation. Dr Charan Singh, Delhi government's nodal officer for swine flu, said, "Routine screening has also been stopped as most people have developed anti-bodies against the virus. However, there is no harm in taking preventive measures."

Prevention mainly involves implementation of the respiratory hygiene, cough etiquette and hand hygiene.

- Maintain a distance of at least 3 feet from the person who is coughing and sneezing.
- Covering the mouth and nose with a tissue when you cough and sneeze and put the used tissue in a waste basket.
- If one does not have a tissue one should cough and sneeze into the upper sleeves and not hands or handkerchief.
- Hand hygiene can be performed by washing hands with soap and water or by using alcohol-based hand rubs.

With Best Compliments from :
NIDHISH MEDICALS
S-15/10, Ganesh Market, Indiranagar, Lucknow.
Ph.:9415797272

SHIVA MEDICALS
We stock & Sale Quality Medicine
S-15/8, Ganesh Market
Near Hanuman Mandir
Indiara Nagar,
Lucknow - 226 016
Cell : 9935832385

Dr Lal PathLabs
Where Quality, Service, Innovation is A Way Of Life
KHUSHI MEDICAL & RESEARCH CENTRE
S-15/107, Ganesh Market, Indira Nagar, Lucknow-16, Ph.: 0522-3015680, 8090111100, 9450097512
Services Offered:Deals in More Than 1600 Pathology Tests.The Lab Is NABL & CAP Certified.
डॉ लाल पैथलैब्स, भारत की अग्रणी सर्वाधिक प्रतिष्ठित डायग्नोस्टिक श्रंखला है, जो आपको ऐसी विश्वस्तरीय सेवायें देता है, जिस पर पूरे भारत में लाखों ग्रहक एवं हजारों डाक्टर भरोसा करते हैं।आज की भागदौड वाली जिन्दगी व हरपल बदलती जीवनशैली के कारण हमारा शरीर कई बीमारियों को बुलावा दे रहा है। यह जानना आवश्यक है कि हमारे शरीर के अंदर क्या चल रहा है ओर इसलिये हमें समय –समय पर किसी अच्छे विशेषज्ञ से जॉच करानी चाहिये । हम आपके पूरे स्वास्थ्य के लिये आवश्यक परीक्षणों की श्रेणी की विशेष योजना लाये हैं , जो आपके इस बदलते मौसम से लडने के साथ ही साथ स्वस्थ रहने में मदद करेगी ।जॉच कराइये सबसे बेहतर से और स्वस्थ रहिये ।

Sadbhawana Hospital
Sarvoday Nagar, Lucknow.
"Multispecialty" Sadbhawana Hospital is a landmark tertiary care health destination managed by highly experienced group. First of its kind in Lucknow, the 50+ bedded hospital has the state-of-the-art technology over virtually all specialties. The technology advantage is complemented by the man power excellence providing sophisticated and specialized medical care at affordable cost. With a team dedicated in bringing you a world of care with every visit. "World-class medical care, friendly, devoted service and affordability are the key features in our every touch."



स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक अम्बरीश द्विवेदी द्वारा यज्दा ए काम्यूनीकेशन ग्रुप, 336 प्रिन्स काम्प्लेक्स, हज़रतगंज, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-695, इन्दिरा नगर, लखनऊ से प्रकाशित किया। RNI No.: UPBIL/2012/46720
सम्पादक : अम्बरीश द्विवेदी कार्यकारी सम्पादक : एस.एन.लाल सम्पादकीय सलाहकार : मनोज तिवारी प्रबन्धक : एस.पी.द्विवेदी
सम्पर्क : 9450097512, 0522-4001081, 9307282052, e-mail: khushisamay.india@gmail.com , शाखा कार्यालय : 338, तृतीय तल, प्रिन्स काम्प्लेक्स, हज़रतगंज, लखनऊ, रामाज्ञा, गोईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ